Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 14 ~ Issue 9 (September 2026) pp: 138-141
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

कालिदास के रूपकों में नारी सशक्तीकरण

कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक आचार्य (संस्कृत)
राजकीय महाविद्यालय, भादरा
हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

सारांश :–

कविता कामिनीकान्त महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य जगत् के शिरोमणि हैं। उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं जैसे महाकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य आदि के क्षेत्र में विशिष्ट कीर्ति प्राप्त की है। यदि बात की जाए नाट्य साहित्य की तो कालिदास संस्कृत साहित्य के आद्य नाटककारों में परिगणित है। उनके द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् एवं मालविकाग्निमित्रम् उच्च कोटि के रूपक हैं। इनमें नाट्यशास्त्र के अनुसार वस्तु, नेता एवं रस से सम्बन्धित नियमों का सम्यक् निर्वहन किया है। इन नाटकों की विषयवस्तु युक्तियुक्त एवं प्रासंगिक है। इनके नाटको में केवल पुरुषों की ही प्रधानता नहीं है अपितु स्त्रियों को भी समुचित स्थान दिया है। इनके रूपकों में वर्णित विषय–वस्तु के अध्ययन से ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास नारी सशक्तीकरण के प्रबल समर्थक थे। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुन्तला, प्रियंवदा, अनसूया, गौतमी आदि को गरिमापूर्ण स्थान दिया है। विक्रमोर्वशीयम् में महाराज पुरूरवा के लिए उर्वशी की तुलना में स्वर्ग का सुख भी गौण है। मालविकामित्रम् में मालविका को तो उच्चतम स्थान प्राप्त है ही किन्तु धारिणी एवं इरावती की प्रतिष्ठा भी महाराज अग्निमित्र की दृष्टि में न्यून नहीं है अर्थात् महाकवि कालिदास ने नारी–शक्ति को विशिष्ट गरिमापूर्ण स्थान दिया है।

संकेत शब्द :–

अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, नारी–शक्ति, नाटककार, वस्तु, नेता, रस, पात्र–चित्रण, महाकवि, नाटक।

परिचय :–

महाकवि कालिदास न केवल संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ कवि है अपितु वे सम्पूर्ण काव्य जगत् में सर्वोपरि स्थान पर सुशोभित है। उनके द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम् एवं ऋतुसंहार का काव्य के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। अब तक ज्ञात श्रोतों से पता चलता है कि कालिदास विक्रमादित्य नामक राजा की सभा में नवरत्नों में अन्यतम थे एवं अष्टमूर्ति रूप शिव के भक्त थे।[1] किवंदन्ती है कि कालिदास बाल्यवस्था में मूर्ख थे उनका विवाह श्रेष्ठ विदुषी ज्ञानगर्विता विद्योत्तमा से हुआ था। उनकी पत्नी ने उनका तिरस्कार कर दिया था। इससे ही स्पष्ट होता है कि कालिदास स्वयं स्त्री–शक्ति से प्रताड़ित थे। अतः इसका प्रभाव उनके काव्य पर भी परिलक्षित होता है। इनकी सभी रचनाओं में विशेषकर रूपकों में स्त्रियों की प्रभावपूर्ण भूमिका को उद्घाटित किया गया है।

विवेचन :–

सरस्वती के वरद पुत्र कहाकवि कालिदास रचित रूपकों में अभी तक तीन रूपक सर्वत्र उपलब्ध हैं, ये हैं अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् एवं मालविकाग्निमित्रम्। इन रूपकों में कथावस्तु, पात्र–चित्रण, रस, छन्द, अलंकार, गुण, रीति, प्रकृत्ति चित्रण आदि का सुन्दर संयोजन है। किन्तु कालिदास के रूपकों एक यह बात विशिष्ट है कि उन्होंने इनमें नारी के स्वाभिमान एवं उनकी गरिमा और प्रतिष्ठा को विशेष स्थान दिया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त जब पहली बार आश्रम में शकुन्तला को देखते हैं तब वह सखियों के साथ पौधों में जल सेंचन का कार्य कर रही थी तो भी राजा को शकुन्तला पर दया आती है कि ऋषि को इस कोमल बाला से यह कठोर कार्य नहीं करवाना चाहिए। यह कार्य तो नीलोत्पल की धार से शमी (खेजड़ी) को काटने के समान है –

"ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया,
शमीलतां छेतुमृषिर्व्यवसयति।[2]

तात्पर्य यह है कि यहाँ पर महाकवि ने नारियों से क्षमता से अधिक श्रम करवाने का विरोध किया है।

जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला पर मुग्ध होते हैं तो भी बलपूर्वक विवाह नहीं करते हैं अपितु यह ही कहते हैं कि इस कन्या के प्रति मेरा आकर्षण है तो निश्चय ही यह क्षत्रिय से विवाह के योग्य है अन्यथा इनके प्रति मेरे मन में विचार नहीं आ सकता है –

"असंशय क्षत्रपरिग्रह क्षमा,
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।"[3]

राजा का कथन नारी शक्ति के सम्मान का द्योतक है।

दुष्यन्त स्वयं कहते हैं कि दुष्टजनों के शासक राजा दुष्यन्त के पृथ्वी पर शासन करने पर तपस्वी कन्याओं पर कोई भी अशिष्ट व्यवहार नहीं कर सकता है।[4]

शकुन्तला की दोनों सखियाँ अनसूया एवं प्रियंवदा जिस प्रकार से राजा का आतिथ्य सत्कार करती हैं एवं दुर्वासा ऋषि से शकुन्तला का शाप कम करवाने का प्रयास करती है उससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को पर्याप्त स्वतंत्रता थी।

शकुन्तला का दुष्यन्त से गान्धर्व विवाह हुआ था जो इस बात का प्रमाण है कि उस समय नारियों को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता थी। यह कथन भी स्त्रियों की शक्ति का प्रतीक है।

जब राजा दुष्यन्त आश्रम में शकुन्तला पर मुग्ध होते हैं तो उस समय उसको राजमाता का बुलावा आता है तो वे विदूषक को भेजते हैं और उसको कहते हैं कि मेरा शकुन्तला से कोई प्रेम नहीं है, मैने तो आपको यह मजाक में ही कहा था। इस कथन का उद्देश्य यह था कि रनिवास की रानियों को इस प्रेम प्रसंग का पता न चल सके। इससे यह पता चलता है कि रानियों का राजा पर प्रभुत्व होता था।

शकुन्तला की विदाई के समय गौतमी को साथ भेजा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय महिलाओं की सामाजिक एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों में समुचित सहभागिता थी।

शाप के वशीभूत राजा दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचान नहीं पाते हैं तो वह राजा को प्रमाण देती है तो राजा शकुन्तला के कथन पर कहते हैं कि स्त्री जाति तो स्वाभाविक रूप से चालाक होती है वह मानव जाति से भिन्न ही क्यों न हो। कोयल तो पक्षी होती है वह भी उड़ने से पूर्व अपने बच्चों को कौओं के घोंसले में छोड़ देती है ताकि कौए अपने बच्चे मानकर उनका लालन पालन कर सकें।

"स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु"[6]

इस कथन में कालिदास के द्वारा स्त्रियों को पटु बताकर उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध किया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक में राजा दुष्यन्त ने स्पष्ट शब्दों में स्त्रियों को प्रत्युत्पन्नमति कहा है।

जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला को स्वीकार नहीं करते हैं तो वह राजा को "अनार्य"[7] कहती है। यह एक बहुत बड़ा प्रमाण है कि नारी का उस समय क्या स्थान था। राजा के दरबार में एक स्त्री के द्वारा राजा को 'अनार्य' कहकर सम्बोधित करना नारियों की प्रभावशाली स्थिति का द्योतक है।

जब यह निश्चय नहीं हो पाता है कि शकुन्तला एवं दुष्यन्त का गान्धर्व विवाह हुआ है या नही तो भी शकुन्तला को पुरोहित के घर ससम्मान रखने का निर्णय होता है। तात्पर्य यह है कि स्त्रियों का उस समय सम्मानजनक स्थान था।

अप्सरा मेनका को भी अदृश्य शक्ति के रूप में दिखाया गया है। जो कालिदास की नारी सशक्तीकरण की भावना के अनुरूप है। राजा दुष्यन्त जब मारीच ऋषि के आश्रम में जाते हैं तो राजा तापसी को आर्या शब्द से सम्बोधित करते हैं जबकि तापसी से राजा सर्वदमन के पिता का नाम पूछते हैं तो तापसी राजा को कहती है कि कौन ऐसा व्यक्ति है जो धर्म पत्नी को छोड़ने वाले का नाम लेगा। तात्पर्य यह है कि नारियों का अपमान करने वालों को समाज में कोई स्थान नहीं था।

राजा ने शकुन्तला को अस्वीकार दुर्वासा के शाप के कारण ही किया था तो भी राजा इस कृत्य के लिए स्वयं को अपराधी मानते है एवं उनको पश्चात्ताप होता है। वे शकुन्तला के आँसू पोंछकर पाप रहित होना चाहते हैं –

"वाष्पं प्रमृज्य विगतानुशयो भवेयम्"[8]

विक्रमोर्वशीयम् में भी महाकवि कालिदास ने नारी गरिमा को प्रमुख स्थान दिया है। देवी औशीनरी एवं अप्सरा उर्वशी को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त है। राजा उर्वशी के प्रेम से बन्धा हुआ होने पर भी देवी औशीनरी की अनुमति के बिना उर्वशी को पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता है।

जब केशी नामक दैत्य उर्वशी को आक्रान्त करता है तो राजा निःस्वार्थ भाव से उर्वशी की रक्षा करता है तब उर्वशी अन्धकारयुक्त रात्री एवं विमल–सलिला गंगा के समान अनुकूल स्थिति को प्राप्त करती है।[9]

जब राजा उर्वशी के बिना चित्रलेखा से मिलता है तो भी उर्वशी का ही गुणगान करता है और चित्रलेखा से कहता है – अपनी सखी से रहित होने के कारण आप मुझे उतना नहीं आनन्दित कर रही है –

"न तथा नन्दयसि मां सख्या विरहिता तया।"[10]

उर्वशी जब राजा पुरूरवा की जयकार करती है तो राजा इसे अपनी विजय का बड़ा प्रमाण मानते हैं और कहते हैं कि सुन्दरी मेरी जय का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा।[11]

जब विदूषक की अकुशलता से उर्वशी विषयक प्रेम पत्र जब देवी औशीनरी को मिल जाता है तो राजा पुरूरवा देवी के चरणों में गिरता है और स्वयं को दास कहता है –

"अपराधी नामाहं प्रसीद रम्भोरु विरम संरम्भात्।
सव्यो जनश्च कुपितः कथं नु दासो निरपराधः।।"[12]
(इति पादयोः पतति)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि विक्रमोर्वशीयम् में नारियों की सशक्त स्थिति दृष्टिगोचर है। मालविकाग्निमित्रम् में भी धारिणी, इरावती एवं मालविका की प्रभावी भूमिका है।

संन्यासिनी कौशिकी को भी सम्मान योग्य स्थान प्राप्त है। जब नाट्याचार्य गणदास एवं हरदत्त के बीच योग्यता विषय विवाद होता है तो उनके निर्णय का दायित्व संन्यासिनी कौशिकी को ही मिलता है।

"पण्डित कौशिकीसहितायाः समक्षमेव न्यायो व्यवहारः"[13]

रानी इरावती को भी राजा रुष्ट नहीं होने देता है, इरावती जब राजा को प्रमदवन में मालविका के साथ देख लेती है तो राजा से नाराज होती है तो राजा उनसे क्षमा याचना करता है –

"चरण पतितया न चण्डिताम्,
विसृजसि मेखलापि याचिता।"[14]

मालविका तो इस नाटक की नायिका है। इसको तो राजा चकवी की संज्ञा देता है एवं स्वयं को चकवा कहता है –

"अहं रथांगनामेव प्रिया सहचरीव मे।"[15]

महारानी धारिणी की प्रभुता तो सर्वत्र दिखाई देती है जब धारिणी को मालविका एवं अग्निमित्र के प्रेम का पता चलता है तो धारिणी मालविका को कारागार में डाल देती है तो भी राजा कुछ नहीं कर पाता है। जब धारिणी को ज्ञात होता है कि मालविका राजकुमारी है तो वह ही राजा से विवाह की अनुमति देती है –

"आर्य इदानीमिमां प्रतीच्छतु।"[15]

तात्पर्य यह है कि मालविका की तीनों रानियों की अपनी पहचान है वे राजा की दया पर आश्रित नहीं है। उनका अपना प्रभाव है।

निष्कर्ष :–

पूर्वोक्त रूपकों के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि महाकवि कालिदास नारी गरिमा एवं नारी सम्मान के प्रबल पक्षधर हैं। इन तीनों रूपकों के नायक अपनी नायिकाओं के प्रति हृदय से समर्पित है। यद्यपि राज दरबार में कई अन्य रानियां भी हैं किन्तु उनका भी किसी प्रकार से शोषण नहीं होता है। उनकी भी प्रमुख कार्यों में निर्णायक भूमिका है। अन्य स्त्री पात्रों यथा गौमती, प्रियंवदा, अनसूया, कौशिकी आदि का भी गरिमापूर्ण चरित्र दृष्टिगोचर है। यद्यपि अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं मालविकाग्निमित्रम् में अवगुण्ठन (घूंघट) का उल्लेख मिलता है एवं नारी पात्रों द्वारा प्राकृत का प्रयोग किया गया है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि नारी केवल उपभोग की वस्तु थी। जिन भी राजकुमारियों से राजाओं का विवाह होता था वह ससम्मान ही होता था। किसी भी स्त्री पात्र के अपहरण का वर्णन नहीं मिलता है न ही कोई ऐसा विवरण मिलता है जो समाज के लिए निन्दनीय हो। तपोवन में भी कन्याएँ पूर्णतया सुरक्षित हैं। यदि कोई नारी से दुर्व्यवहार का प्रयास करता है तो राजा स्वयं दोषियों को दण्ड देने के लिए तत्पर है। अतः कहा जा सकता है कि कालिदास ने अपने काव्य के माध्यम से नारी सशक्तीकरण की दिशा में प्रशंसनीय एवं सार्थक प्रयास किया है। जिससे परवर्ती काल में नारी–शक्ति को संबल प्राप्त हुआ है।

सन्दर्भ सूची :–

1. रघुवंशम् – कालिदास 2/35
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/16
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/19
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/21
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 2/18
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 5/22
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 5/गद्य भाग
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 7/25
9. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 1/9
10. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 12/15
11. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 2/17
12. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 2/21
13. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 1/गद्य भाग
14. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 3/20
15. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 5/9
16. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 5/गद्य भाग